



DAWAT-E-ISLAMI

રિસાલા નંબર : 131

Mendak Suwaar Bichchhu (Gujarati)

મેંડક સુવાર બિચ્છૂ

(મઅ મુસીબત કી ફઝીલત 32 રૂહાની ઇલાજ)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ જિલાલ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अः शैभे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी, हजरत अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अतार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ
दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ
लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا دَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह! हम पर ईल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ! (المستطرف ج ١ ص ٤٠٤ دار الفكر بيروت)
नोट : अव्वल आबिर अेक अेक बार हुइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व बकीअ

व मजिदरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



मेंडक सुवार बिस्वू

येह रिसाला (मेंडक सुवार बिस्वू)

शैभे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी हजरत
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अतार कादिरि र-जवी जियाई
दामत बरकतुहमु अल्लामि ने उईदू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस रिसाले को गुजराती रस्मुल
पत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाअेअ करवाया
है. ईस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें तो मजलिसे तराजिम को
(ब जरीअअे मक्तूब, ई-मैथल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मेंडक सुवार बिखू

शैतान लाभ सुस्ती दिवाअे येड रिसावा (31 सङ्घात)
मुकम्मल पढ लीजिये. إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى. आइतों पर
सभ्र की सोय परवान यढेगी.

दुइए शरीफ़ की इमीलत

दो जहां के सुल्तान, सरवरे जीशान, सरवरे जीशान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
इरमाने मगिरेत निशान है : मुज पर दुइडे पाक पढना पुल सिरात पर नूर
है, जो रोजे जुमुआ मुज पर अस्सी बार दुइडे पाक पढे उस के अस्सी साल के
गुनाह मुआइ हो जाअेंगे. (أَلْفَرَزْدَوْسُ بِمَأْثُورِ الْخُطَابِ ج ٢ ص ٤٠٨ حَدِيثُ ٤٢٨١)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

उजरते सय्यिहुना यूसुफ़ बिन इसन رحمه الله تعالى عليه इरमाते हैं :
अक मर्तबा में उजरते सय्यिहुना जुन्नून भिस्री. رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के साथ
किसी तावाब के कनारे हाजिर था, अयानक हमारी नजर अक बहुत
बडे बिखू पर पडी, एतने में अक बडा सा मेंडक तावाब से निकल पडा !
बिखू उस मेंडक पर सुवार हो गया ! अब मेंडक तैरता हुवा तावाब के
दूसरे कनारे की तरफ़ बढने लगा. येड मन्जर देष कर हम तेजी से
तावाब के उस पार जा पडोंये, कनारे पर पडोंय कर मेंडक ने बिखू को
उतार दिया, बिखू तेजी से अक सभ्त यल दिया, हम भी उस के

इरमाने मुस्तकः عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : श्री शिप्स मुज पर दुइदे पाक पठना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (ज़रान)

तआकुभ में (या'नी पीछे पीछे) रवाना हुअे, कुछ दूर जा कर हम ने अेक लरजा भैज मन्जर देभा, अेक नौ जवान नशे की डालत में बेडोश पडा था, अयानक अेक भौइनाक सांप कहीं से आ निकला और उस नौ जवान के सीने पर यढ गया और उस ने जूं डी उसे डसना याडा, बिखू ने उस पर डम्बा कर दिया और अैसा जडरीला डंक मारा, के भौइनाक सांप जडूर के असर से तल-मलाता हुवा (या'नी बेथैन डो कर) नौ जवान के जिस्म से दूर डट गया और तडप तडप कर मर गया, बिखू तालाभ के कनारे आ कर उसी मेंडक पर सुवार डो कर दूसरे कनारे की तरङ्ग रवाना डो गया. वोह नौ जवान अभी तक नशे में बेडोश पडा था. डजरते सय्यिदुना गुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُورَى ने उस को डिलाया जुलाया तो उस ने आंभें भोल दीं, आप ने इरमाया : अै नौ जवान ! देभ भुदाअे रडमान جَزَّوَجَزَّ ने किस तरड तेरी जान बयाई है ! और मेंडक सुवार बिखू और भौइनाक सांप की अनोभी दास्तान सुनाई और मरा हुवा सांप दिभाया.

नौ जवान भ्वाभे गइलत से जाग उठा, तौभा की और अपने प्यारे प्यारे परवर दगार جَزَّوَجَزَّ के दरबारे करम-भार में अर्ज गुजार हुवा : “अै भुदाअे रडमान جَزَّوَجَزَّ ! जब अपने बन्दगाने ना इरमान के साथ तेरे इजलो अेडसान की येड शान है, तो अपने ताभेअे इरमान बन्टों पर बाराने रडमत का क्या आलम डोगा !” रावी इरमाते हैं : ईस के भा'द वोह नौ जवान अेक जानिभ यल दिया, तो में ने पूछा : “कहां का ईरादा है ?” कडने लगा : إِنِّي رَأَيْتُ اللَّهَ عَزَّوَجَزَّ अब में (दुन्या की

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरदं पाक न पढा तबकीक वो छु भट भत्त हो गया. (उर्दू)

रंगीनियों से दूर रहते हुअे) जंगलों में अपने रब्बे रहमतِ عَزَّوَجَلَّ की
 एबादत किया करूंगा. (عُيُونُ الْحِكَايَاتِ ص ०२ مُلَخَّصًا)

अल्लाह के हर काम में हिक्मत होती है

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! मेंडक सुवार बिखू
 ने किस तरह नशे में धुत शराबी नौ जवान को अल्लाहु रब्बुल एज्जलत
 की रहमत से भौइनाक सांप की मुसीबत से बचाया ! यकीनन
 रब्बे रहमतِ عَزَّوَجَلَّ की हिक्मत को समझने से हम कासिर हैं, उस के हर
 हर काम में हिक्मत होती है, किसी को मुसीबत में मुत्तला करना भी
 हिक्मत तो किसी को बे तलब मुसीबत से बचा लेना भी हिक्मत.
 भा'ज अवकात बन्दे मुसीबत में ईसा होता है तो बारगाहे खुदा वन्दी
 में लुकता और उस की एबादत की तरफ़ रुख करता है और कभी औसा
 भी होता है के अल्लाह एَزَّوَجَلَّ जब सर पर आ पड़ोयने वाली मुसीबत
 से डिफ़ाजत कर के ओहसान इरमाता है तो बन्दे ना इरमान ताबेअे
 इरमान हो जाता है, जैसा के इस हिकायत “मेंडक सुवार बिखू” से
 जाहिर हुवा.

गुनाहों का हे सुदूर आह ! हर घडी या रब !

कर अइव लाअे ! अजल सर पे हे भडी या रब !

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

अल्लाह जो करता है बेहतर करता है

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती एदारे मक-त-भतुल मदीना की

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस ने मुज़ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरहे पाक पढा
उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अबुअर्रुह)

मत्बूआ 413 सङ्घात पर मुश्तमिल किताब, “उयूनुल डिक्वायात” (हिस्सअे अव्वल) के सङ्घा 187 पर है : अल्लाह का अेक नेक बन्द़ा किसी जंगल की बस्ती में रहा करता था. उस के पास अेक मुर्गा, अेक गधा और अेक कुत्ता था. मुर्गा सुब्ह नमाज़ के लिये जगाता, गधे पर वोह पानी और द्दीगर यीज़ें लाद कर लाता और कुत्ता उस के मकान व सामान की रखवाली करता. अेक दिन मुर्गे को लोमड़ी भा गई, घर के अफ़राद इस नुकसान पर परेशान हुअे मगर उस नेक शप्स ने सभ्र किया और कहा : “अल्लाह جَلَّ وَعَزَّ जो करता है बेहतर करता है.” यन्द दिन के भा’द बेडिये (WOLF) ने गधे को खीर फ़ाड डाला, अहले पाना गमगीन हुअे लेकिन उस नेक आदमी ने येही कहा : “अल्लाह جَلَّ وَعَزَّ जो करता है बेहतर करता है.” फिर कुछ अर्से भा’द कुत्ता भीमार हो कर मर गया, इस पर भी उस ने येही अल्फ़ाज़ दोहराअे : “अल्लाह جَلَّ وَعَزَّ जो करता है बेहतर करता है.” कुछ रोज़ के भा’द यकायक दुश्मनों ने जंगल की उस बस्ती पर शअभून मारा (या’नी रात में डम्बा कर दिया) और ज़ानवरों की आवाज़ें सुन सुन कर घरों का भोज (या’नी पता) लगाया और माल व अस्बाब समेत सभ घर वालों को डैदी बना कर ले गअे. उस नेक शप्स के घर में कोई ज़ानवर था ही नहीं जो बोलता लिहाज़ा दुश्मन को अंधेरे में उस के मकान का पता ही न चल सका, और इस तरह वोह इस आइते ना-गहानी (या’नी अयानक आने वाली मुसीबत) से मडकूज़ रहा और यूँ सभ्र के साथ साथ इस का यकीन मज़ीद मज़भूत हो गया, के “अल्लाह جَلَّ وَعَزَّ जो करता है बेहतर करता है.”

(عبرئ الحكايات ص ٢١ المخلصا) अल्लाहु रब्बुल ईज़ज़त जَلَّ وَعَزَّ की उन पर रहमत हो

करमाने मुस्तक! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुइद शरीफ न पढा उस ने जइकी की. (عبدالرزاق)

और उन के सदके उमारी बे हिसाब मगिरत हो.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

अगर डाकू आ जाता तो.....?

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! इस हिकायत से दर्स मिला, के जब भी कोई बीमारी, परेशानी, बे रोजगारी वगैरा आऊमाईश आ पडे हमें येही समजना और कलना याहिये के “अल्लाह जो करता है बेहतर करता है.” क्यूंके हर मुसीबत से बडी मुसीबत होती है. म-सलन घर में थोरी हो जाये तो अगरे माली नुकसान हुवा है मगर येही कलना याहिये : “अल्लाह जो करता है बेहतर करता है.” क्यूंके अगर डाकू हम्ला करते तो शायद माली नुकसान के साथ साथ जानी नुकसान भी हो जाता ! येह भी जेहन में रहे के बसा अवकात दुन्या में मिलने वाली ने’मत बहुत बडी मुसीबत का भाईस भी बन जाती है, म-सलन किसी का पांच करोड का भोंड जुला ! ब जाहिर येह जुशी के मारे पागल कर देने वाला मुआ-मला है मगर उसे क्या मा’लूम, के उस के हक में येह ने’मत है या मुसीबत ? आया इस रकम के जरीये मस्जिद की ता’मीर की सआदत मिलेगी या इस दौलत के सबब डाकूओं के जरीये जान भी बली जायेगी ! किस को मा’लूम, के येह करोडों रुपै औशो ईशरत में वुस्हत के लिये आये हैं या ईन्आम याइता के लिये अपने या घर के किसी अहम इर्द की बीमारी के ईलाज के लिये पछोंये हैं. ओ हां ! औसा होना मुश्किन है. युनान्चे इस जिम्न में अक सखी हिकायत सुनिये :

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરૂદ શરીફ પઢેગા મેં કિયામત કે દિન ઉસ કી શકામત કરેગા. (કુબરા)

જિગર કી તબ્દીલી (હિકાયત)

એક મુબલ્લિગે દા'વતે ઇસ્લામી કા બયાન કુછ યૂં હૈ કે મેરે એક અઝીઝ જિન્હોં ને સારી ઝિન્દગી મેહનતો મશક્કત કર કે કાફી દુન્યવી માલ જમ્મ કિયા ઓર અબ વોહ એક ફેક્ટરી કે માલિક હૈં, ઉન્હેં ડૉક્ટરોં ને ઇલાજ કે લિયે જિગર (LIVER) કી તબ્દીલી કા મશ્વરા દિયા હૈ જિસ પર કમો બેશ 75 લાખ રુપૈ કા ખર્ચ મુન્તવક્કેઅ હૈ. જિસ કે લિયે વોહ બેચારે બરસોં કી મેહનત સે કાઈમ કર્દા ફેક્ટરી બેચને કી તરકીબ બના રહે હૈં.

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! ઇસ ઇબ્રત નાક હિકાયત પર ગૌર ફરમાઈયે ! જબ ઉન્હોં ને કામ કી ઇબ્તિદા કી હોગી ઓર કારોબાર તરક્કી કે ઝીને તૈ કરને લગા હોગા તો કિતની ખુશી હાસિલ હુઈ હોગી ! મગર ઉન્હેં ક્યા મા'લૂમ થા કે યેહ લાખોં રુપૈ અપને જિગર કી તબ્દીલી કે લિયે જમ્મ કર રહે હૈં. શર-ઈ મસ્અલા યાદ રખિયે, કે આ'ઝા કી તબ્દીલી જાઈઝ નહીં.

જહાં મેં હૈં ઇબ્રત કે હર સૂ નુમૂને મગર તુઝ કો અન્ધા કિયા રંગો બૂ ને કભી ગૌર સે ભી યેહ દેખા હૈ તૂ ને જો આબાદ થે વોહ મહલ અબ હૈં સૂને

જગહ જી લગાને કી દુન્યા નહીં હૈ

યેહ ઇબ્રત કી જા હૈ તમાશા નહીં હૈ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

આઝમાઈશોં કી બારિશ

મુસીબત ઝઘો ! હિમ્મત મત હારો ! મુસીબતેં اللهُ إِنِّي لَدُوْعُوْنَ

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अहमद)

जहानों में बेडा पार करवा देंगी युनान्थे हजरते सय्यिदुना अनस
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से रिवायत है के सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के
 मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : जब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ किसी
 बन्दे से महबूबत इरमाता है तो उस पर आजमाईशों की बारिश बरसाता है
 इर जब वोह बन्दा अपने रब عَزَّ وَجَلَّ को पुकारता है : “ओ मेरे रब عَزَّ وَجَلَّ !”
 तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरमाता है : “मेरे बन्दे ! तू जो कुछ मुज से मांगेगा मैं तुजे
 अता इरमाउंगा या तो जल्द ही तुजे दे दूंगा या उसे तेरी आभिरत के लिये
 ज्पीरा कर दूंगा.” (अल्मरुसु वलकफ़ारत مع موسوعة ابن أبي الدنيا ج 4 ص 280 حديث 212)

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की
 मत्बूआ 853 सइहात पर मुश्तमिल किताब, “जल्नम में ले जाने
 वाले आ'माल” जिल्द अव्वल सइहा 525 पर है : हजरते मदाईनी
 رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कहते हैं : मैं ने जंगल में ओक औरत को देखा तो गुमान
 किया के शायद येह बहुत भुशाल है, लेकिन उस ने बताया : “वोह
 गर्मों और परेशानियों की हम-नशीन है, ओक मर्तबा उस के शोहर ने
 ओक बकरी ज्बु की तो उस के बेटों में से ओक ने अपने ल्माई को इसी
 तरह ज्बु करने का इरादा किया और उसे ज्बु कर दिया इर वोह
 घबरा कर पहाड की तरफ़ ल्माग गया और ल्मेडिया (WOLF) उसे प्हा
 गया, उस का बाप उस के पीछे गया और प्थास की शिदत से वोह ल्मी
 मर गया.” तो मैं ने उस से पूछा : तुम्हें सअ्र कैसे आया ? उस ने
 ज्वाब दिया : वोह तकलीफ़ तो ओक ज्भम था जो ल्मर गया.

इरमाने मुस्तक। صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पढींयता है. (अर।)

मुझे नाबीना रहना मन्जूर है

उजरते सय्यिदुना अबू बसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِيرِ (जो के नाबीना थे) इरमाते हैं : मैं अेक बार उजरते सय्यिदुना عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَادِرِ इमाम बाकिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने मेरे येडरे पर हाथ डैरा तो आंभें रोशन हो गई, जब दोबारा हाथ डैरा तो डिर नाबीना हो गया. उजरते सय्यिदुना इमाम बाकिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَادِرِ ने मुज से इरमाया : आप इन दोनों बातों में से कौन सी बात इप्तियार करना याडते हैं ? ﴿1﴾ आप की आंभें रोशन हो जाअें और डियामत के रोज आप से बीनाई की ने'मत का और दीगर आ'माल का हिसाब लिया जाअे ﴿2﴾ आप नाबीना डी रहें और बिगैर हिसाबो डिताब जन्नत का दाबिला नसीब हो जाअे ? मैं ने अर्ज की : जन्नत में बे हिसाब दाबिला याडिये. मुझे नाबीना रहना मन्जूर है.

(शुाहदुलनुबुतु, व २६१ मुल्खुसुवु)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

दुप्यारा सज तकलीडें भूल जाअेगा !

भीठे भीठे इस्लामी लाईयो ! उअरवी मुसीबतों के सामने दुन्यवी राडतों की कोई हकीकत नडी, जहन्नम का सिई अेक जोंका उअर तर की राडत सामानियों को लुला और भाक में भिला कर रभ देगा, इसी तरड उअरवी ने'मतों के सामने दुन्यवी तकलीडें की भी कोई हैसियत नडी, जन्नत का सिई अेक डैरा जिन्दगी तर की तकलीडें को नस्यम

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रलमतें नाजिल करमाता है. (प्र०)

मन्सिय्या (या'नी भूला बिसरा) कर देगा और दुप्यारा बन्दा अपने सारे दुभ भूल कर येही समझेगा के मुझे कल्मी कोई तकलीफ़ पछोंयी ही नहीँ जैसा के ताजदारे मदीना, करारे कल्भो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने भा करीना है : कियामत के दिन उस दोज़भी को लाया जायेगा जिसे दुन्या में सब से जियादा ने'मतें मिलीं और उसे जहन्नम का अेक जोंका दे कर पूछा जायेगा : अै आदमी ! क्या तू ने कल्मी कोई भलाई देभी थी ? क्या तुजे कल्मी कोई ने'मत मिली थी ? तो वोह कहेगा : “भुदा عَزَّوَجَلَّ की कसम ! नहीँ.” फिर उस जन्नती को लाया जायेगा जो दुन्या में सब से जियादा तकलीफ़ में रहा और उसे जन्नत का गोता दिया जायेगा फिर उस से पूछा जायेगा : अै इन्सान ! क्या तू ने कल्मी कोई तकलीफ़ देथी थी ? तुज पर कल्मी कोई सप्ती आई थी ? तो वोह कहेगा : भभुदा ! अै मेरे रभ ! कल्मी नहीँ, मुजे कल्मी कोई तकलीफ़ नहीँ हुई और न मैं ने कल्मी कोई सप्ती देभी. (مسلم ص १००८ حديث २१०७)

“इमान” का लिबास (लिकायत)

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! जब ली कोई आइत आ पडे प्वाह तवील अर्से तक बे रोजगारी या भीमारी दूर न हो या मसाईल उल न हों, हर मौकअ पर सिर्फ़ सभ्र सभ्र और सभ्र से काम लेना और आभिरत का सवाभ हासिल करना याहिये. हजरते सय्यिदुना दावूद عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे भुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अर्ज की : अै मेरे रभ ! तेरी रिजा के हुसूल के लिये जो मुसीबतों पर सभ्र करता है उस परेशान इन्सान का बहला क्या है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरमाया : उस

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से क्यूस तरीन शप्स है. (त्रिबिया)

का बढला येह है के मैं उसे ईमान का लिबास पहनाउंगी। और उस से कभी ली नहीं उतारुंगी. (احياء القلوب ٤٦ ص ٩٠) अद्लाहु रब्बुल ईज़्ज़त
 ʿअमिन بجاۃ النبی الامین صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 वोह ईशके डकीकी की लज़्ज़त नहीं पा सकता

जो रन्जो मुसीबत से डोयार नहीं डोता

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

करबला वालों से बढ कर मुसीबत ऋदा कौन ?

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो! परेशान डाल को याहिये के अद्लाह
 ʿعَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ पर राना पर रानी रहे और फुद पर “ईन्डिरादी कोशिश” करते
 डुअे हिल डी हिल में कडे, के शडीदान व असीराने करबला
 पर जो मुसीबते आई थीं वोह यकीनन तुज पर आने वाली मुसीबतो
 से करोडों गुना जियादा थीं मगर उन्डों ने डंसी फुशी बरददशत कीं और
 सभ्र कर के कुर्बे ईलाडी के डकदार बने. तू कहीं बे सभ्री कर के आभिरत
 की सआदत से मडरूम न डो जाअे. यकीनन यकीनन यकीनन डुन्यवी
 परेशानियो, तंगदस्तियो, बीमारियो वगैरा में सभ्र करने वालों के लिये
 आभिरत की फूब फूब राडत सामानियां हैं.

रोशन कब्रें

किसी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने डरते सय्यिहुना डसन बिन
 डकवान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ को उन की वफ़ात के अक साल बा'द फ्वाब में

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइदे पाक न पड़े. (८)

देभा तो इस्तिफ़सार किया (या'नी पूछा) : कौन सी कब्रें जियादा रोशन हैं ?
इरमाया : **قُبُورُ أَهْلِ الْمَصَائِبِ فِي الدُّنْيَا** या'नी दुन्या में मुसीबतें उठाने वालों की.
(**تَنْبِيهُ الْمُغْتَرِبِينَ** ص ११६)

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देभा आप ने ! वोह घुप अंधेरी कब्र जिसे दुन्या का कोई बर्का बलब रोशन नहीं कर सकता, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**, वोह भीठे भीठे आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के नूर के सदके परेशान डालों के लिये नूर नूर हो कर जग-मगा उठेगी.

ज्वाब में भी औसा अन्धेरा कभी देभा न था
जैसा अन्धेरा डमारी कब्र में सरकार है
या रसूलवलाह ! आ कर कब्र रोशन कीजिये
जात बेशक आप की तो मम्बअे अन्वार है
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

काश ! हमारे बदन कैयियों से काटे जाते !

जब भी मुसीबत आये सभ्र कर के अज के डकदार बनिये, अल्लाह तबा-र-क व तआला पारह 23 सू-रतुज्जुमर की आयत 10 में इशाह इरमाता है :

إِنَّمَا يُوقِي الصَّبْرُ وَنَاجِرُهُمْ तर-ज-मअे कन्जुल इमान : साबिरों ही
को उन का सवाब भरपूर दिया जायेगा बे
بِعَيْرِ حَسَابٍ ① गिनती.

सदरुल अफ़जिल डउरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي** इस आयत के तहत लिखते

इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरेद पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क्रोमल)

हैं : हजरते मौलाअे काअेनात, अलिय्युल मुर्तजा शेरे जुदा क़रम كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ ने इरमाया के : हर नेकी करने वाले की नेकियों का वज़ू किया जाअेगा सिवाअे सभ्र करने वालों के, के उन्हेँ बे अन्दाजा और बे हिसाब दिया जाअेगा और येह त्मी भरवी है के अस्हाबे मुसीबत व बला (या'नी मुसीबत ज़दा लोग) हाज़िर किये जाअेंगे, न उन के लिये मीज़ान (तराज़ू) काँम की जाअे न उन के लये दइतर (या'नी नामअे आ'माल) ખोले जाअें, उन पर अजरो सवाब की बे हिसाब बारिश होगी यहां तक के दुन्या में आइय्यत की जिन्दगी बसर करने वाले उन्हेँ देਖ कर आरजू करेंगे, के काश ! वोह अहले मुसीबत में से होते और उन के जिस्म केंथियों से काटे गअे होते, के आज येह सभ्र का अज पाते. (अजाँनुल इरफ़ान, स. 850)

दरिन्हों ने पेट इंस डाला था (हिकायत)

हजरते सय्यिदुना मूसा कलीमुद्दाह عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام दिन अेक आदमी के पास से गुजरे जिस का पेट दरिन्हों ने इंस कर गोशत नोय लिया था. आप عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने उसे पडयान लिया, उस के पास षडे लुअे और दुआ की : **يا اءءلاه عَزَّوَجَلَّ !** येह बन्दा तो तेरा इरमां भरदार था मैंँ एसे एस डालत में क्यूं पाता हूं ? **اءءلاه عَزَّوَجَلَّ** ने वइय इरमाँ : “अै मूसा ! एस ने मुज से वोह मकाम तलब किया जिस तक अपने आ'माल के साथ नहीं पड़ोय सकता था युनान्ये मैंँ ने एसे उस मकाम तक पड़ोयाने के लिये एस मुसीबत में मुभ्तला किया है.” (تَنْبِيهُ الْمُغْتَرِبِينَ ص ۱۷۳)

करमाने मुस्तफ़ा: صلى الله تعالى عليه و آله وسلم: मुअज़ पर दुइद शरीफ़ पढे अल्लाहु एज़ुजल तुम पर रडमत भेजेगा. (अनसरी)

कीयड में लिथड हुवा बय्या (लिकायत)

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! ईस लिकायत से मा'लूम हुवा के रब्बे काअेनात अल्लाहु एज़ुजल बुलन्दिये द-रजात के लिये भी नेक बन्दों को इम्तिहानात में मुअ्तला इरमाता है, बेशक अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त अल्लाहु के इर काम में लिकमत डोती है. अलबत्ता येड अज़री नहीं, के सिर्फ़ नेक बन्दों डी पर इम्तिहान आअे, बसा अवकात गुनडगारों को भी मुसीबतों में मुअ्तला कर के गुनाहों की आलू-दगियों से पाक डिया जाता है. युनान्हे मुफ़सिरे शहीर डकीमुल उम्मत डउरते मुफ़ती अडमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَانِ अपनी तकरीरे दिल् पज़ीर में इरमाते हैं : डउरते सय्यिदुना भा यज़ीद बिस्तामी قُدَسَ سِرُّهُ السَّامِي किसी जगड से गुअर रहे थे, मुला-डआ इरमाया, अक बय्या कीयड में गिर गया है और उस का बदन और लिबास गन्दगी में लिथड गअे हैं, लोग देभते हुअे गुअर जाते हैं, कोई परवा भी नहीं करता ! कहीं दूर से मां ने देभा, दौडती हुई आई, दो थप्पड बय्ये के लगाअे, कपडे उतार कर धोअे, उसे गुस्ल दिया. डउरत (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) को येड देभ कर वजद आ गया और इरमाया के येडी डाल डमारा और रडमते ईलाडी (عَزَّوَجَلَّ) का है. डम गुनाहों की दलदल में लिथड जाते हैं, डिसी को क्या परवा ! मगर रडमते ईलाडी (عَزَّوَجَلَّ) का दरिया जोश में आता है, डम को मुसीबतों के अरीअे दुरुस्त डिया जाता है और तौभा व ईबादात के पानी से गुस्ल दे कर साइ इरमाता है. (मुअल्लिमे तकरीर, स. 33 मुलभसन)

इरमाने मुस्तक। صلى الله تعالى عليه و الله وسلم : मुज पर कसरत से दुरेदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरेदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (भा.मि.)

जब मेहरबान मां कुछ सजा दे कर तम्बीह (या'नी जबरदार) कर सकती है तो हमारा जालिक व मालिक عَزَّوَجَلَّ इस से कहीं ज़ियादा मेहरबान है, भा'ज अवकात सजा दे कर इसलाह इरमाता है.

रब्बे कायेनात عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन व मुअमिनात को इम्तिहानात में मुज्तला कर के इन के सय्यियात (या'नी गुनाह) मिटाता और द-रजात बढ़ाता है. लिहाजा जब ली मुसीबत आये पारह 20 सू-रतुल अ-कभूत की दूसरी आयते करीमा को जेहन में ले आयेये :

أَحْسِبَ النَّاسَ أَنْ يَتَزَكَّوْا أَنْ يَّقُولُا
 इस धमन्ड में हें के इतनी बात पर छोड
 أَمَّنَّا وَهُمْ لَآ يَفْقَهُونَ ①
 दिये जाअें, के कहें : हम इमान लाये और
 (प २०, العنكبوت २)
 उन की आजमाईश न होगी.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कोई भलाई नहीं

उज्जरे सय्यिदुना जह्जहाक اللهُ الرَّزَّاقُ इरमाते हें : जो हर यालीस रात में अक मर्तबा ली आइत या इिक व परेशानी में मुज्तला न हो उस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के यहां कोई भलाई नहीं.

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص १०)

आइत व राहत के बारे में पुर हिक्मत रिवायत

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! दुन्यवी आइत व मुसीबत मुसल्मान के उक में अकसर बहुत बड़ी ने'मत होती है, जैसा के मन्कूल है :

इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो मुज पर अक दुइद शरीफ़ पढता है अद्लाह उरुख़ उस के विये अक कीरात अज वियता है और कीरात उदुद पडाउ जितना है. (सुवुर)

अद्लाह عَزَّوَجَلَّ इरमाता है : जब मैं किसी बन्दे पर रइम इरमाना याहता हूं तो उस की बुराई का बदला दुन्या ही में दे देता हूं, कभी बीमारी से, कभी घर वालों में मुसीबत डाल कर, कभी तंगिये मआश (या'नी तंगदस्ती) से, फिर भी अगर कुछ बयता है तो मरते वक्त उस पर सफ़्ती करता हूं उता के जब वोह मुज से मुलाकात करता है तो गुनाहों से औसा पाक डोता है जैसा के उस दिन था जिस दिन, के उस की मां ने उसे जना था. और मुजे अपनी ईज्जततो जलाल की कसम, के मैं जिस बन्दे को अजाब देने का ईरादा रफ़ता हूं उस को उस की हर नेकी का बदला दुन्या ही में देता हूं, कभी जिस्म की सिद्धत से, कभी इराभिये रिज्क से (या'नी रोजी बढा कर), कभी अहलो ईयाल की भुशहाली से, फिर भी अगर (नेकियों का बदला देना) कुछ (बाकी) रह जाता है तो मरते वक्त उस पर आसानी कर दी जाती है उता के जब मुज से मिलता है तो उस की नेकियों में से (उस के पास) कुछ भी (बाकी) नहीं रहता, के वोह नारे जहन्नम से बय सके.

(شرحُ الصّوَر من 28)

आसाइशों पर मत झूलो !

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! इस रिवायत के पेशे नजर गाडियों, ईभारतों, दौलतों, सिद्धतों और तरह तरह की ने'मतों की अपने ठीपर कसरत को देभ कर उर जाना याहिये के कहीं येह दुन्या में नेकियों की जजा न हो और गुरबतों, आइतों, बीमारियों और तरह तरह की मुसीबतों का अपने ठीपर सिद्धिसला देभ कर सभ्र करना और हिल बडा

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब मे मुज़ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अ.५)

रभना याहिये, के हो सकता है येह आभिरत की राहत सामानियों का पेशभैमा हो. हम अद्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ से दोनों जहानों की भलाइयां तलब करते हैं.

इर था के इस्यां की सज्ज, अब होगी या रोजे जज्ज

दी उन की रडमत ने सदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

मुसीबत की अशुभ हिक्मत (हिकायत)

हजरते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इरमाया के अक नबी عَلَيْهِ السَّلَام ने परवर दगार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ के दरबार में अर्ज की : औ मेरे रब्बुल इज़्जत ! भोमिन बन्दा तेरी इताअत करता और तेरी मा'सियत (ना इरमानी) से बयता है (लेकिन) तू इस से दुन्या लपेट लेता और इस को आजमाइशों में डालता है. जब के काफ़िर तेरी इताअत नहीं करता बल्के तुज पर और तेरी मा'सियत (ना इरमानी) पर जुर-अत करता है लेकिन तू उस से मुसीबत को दूर रभता और उस के लिये दुन्या कुशादा कर देता है (आभिर इस में क्या हिक्मत है ?) अद्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने उन की तरफ़ वइय इरमाई : बन्दे भी मेरे हैं और मुसीबत भी मेरे इप्तिवार में है और सब मेरी इम्द के साथ मेरी तस्बीह करते हैं, भोमिन के जिम्मे गुनाह होते हैं तो मैं उस से दुन्या को दूर कर के उस को आजमाइश में डालता हूँ तो येह (आजमाइश व मुसीबत) उस के गुनाहों का कइफ़ारा बन जाती है हत्ता के वोह मुज से मुलाकात करेगा तो मैं उसे नेकियों का बदला दूंगा. और काफ़िर की (दुन्यवी अ'तिबार से) कुछ

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुरदे पाक पढा अदलाह उस पर दस रडमतें बेजता है. (स्)

नेकियां छोती हैं तो मैं उस के लिये रिज़ूक कुशादा करता और मुसीबत को उस से दूर रभता हूं तो यूं उस की नेकियों का बदला दुन्या में ही दे देता हूं छत्ता के जब वोड मुज से मुलाकात करेगा तो मैं उस के गुनाहों की उस को सजा दूंगा. (احياء العلوم ج ٤ ص ١٦٢)

हाथों हाथ सजा

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! रब्बुल अनाम غُرَّ وَجَلَّ के हर हर काम में छिकमतें छोती हैं. तकलीफ़ पर सभ्र कर के अज छसिल करना याछिये क्यूंके आझतो बलिय्यात, कफ़रअे सय्यिआत और भाईसे तरकिकिये द-रजात छोती हैं. (या'नी आझतें और बलाअें गुनाह मिटाने और द-रजे बढाने का जरीआ छोती हैं) युनान्ये ताजदारे रिसालत, मलबूबे रब्बिल इज्जत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : अदलाह जभ किसी बन्दे से लवाई का इरादा करता है तो उस के गुनाह की सजा झैरी तौर पर उसे दुन्या ही में दे देता है. (مُسْنَدُ إمام أحمد بن حنبل ج ٥ ص ٦٣٠ حديث ١٦٨٠٦)

आभिरत की मुसीबत से दुन्या की मुसीबत आसान है

आह ! हम तो गुनाहों में सरापा डूबे छुअे हैं, काश ! जब ली कोई मुसीबत पेश आअे उस वक्त येड जेहन बनाना नसीब हो जअे, के शायद आभिरत के बजअे दुन्या ही में सजा दे दी गई है. इस तरह उम्मीद है के सभ्र आसान हो जअेगा. भुदा की कसम ! मरने के बा'द मिलने वाली सजा के मुकाबले में दुन्या की सजा इन्तिहाई आसान है, दुन्या की मुसीबत आदमी बरदाशत कर ही लेता है मगर आभिरत की

करमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना बूल गया वोह जन्नत का रास्ता बूल गया. (अ. ५)

मुसीबत बरदाश्त करना ना मुम्किन है यहाँ तक के अगर कोई कइ दे, के मैं कब्र या जहन्नम का अजाब बरदाश्त कर लूंगा तो वोह काफ़िर हो जायेगा.

हमारे हक में क्या बेहतर है, हमें नहीं मा'लूम

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो! अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) करता है यकीनन वोह सहीइ करता है, बसा अवकात भा'ज मुआ-मलात बन्दे की समज में नही आते लेकिन बहुत मर्तबा उस के हक में उसी में बेहतरी होती है. युनान्चे पारह 2 सू-रतुल ब-करह की आयत 216 में ईशा'द होता है :

وَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ
خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسَىٰ أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا
وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾

(प. २, البقرة: २१६)

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान: और करीब है, के कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे हक में बेहतर हो और करीब है, के कोई बात तुम्हें पसन्द आये और वोह तुम्हारे हक में बुरी हो और अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) जानता है और तुम नहीं जानते.

हर ओक को इम्तिहान के लिये तय्यार रहना चाहिये

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो! ईमान के साथ जिन्दगी गुजारने वाला ही काम्याब है, बडा नाजुक मुआ-मला है, शैतान हर वक्त

इरमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदें पाक न पढा तउकीक वोउ बढे अप्त हो गया. (उंउः)

ईमान की घात में लगा रहता है. मुसीबत आने पर सभ्र करते हुअे डर डाल में रब्बे जुल जलाल جَزَّوَجَلَّ की रिजा पर राजी रहना याछिये. पाक परवर दगार جَزَّوَجَلَّ डमारा मालिको मुप्तार है. जिसे याहे बे डिसाब जन्नत में दाभिल इरमाअे और जिसे याहे ईम्तिडान में मुप्तला कर के सभ्र की तौईकी अता इरमा कर ईन्आमो ईकराम की बारिशें इरमाअे. मोमिने कामिल वोडी है जो डर डाल में रब्बे जुल जलाल جَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुजार बनडा बन कर रहे. मुसीबतों की वजह से अड्लाड جَزَّوَجَلَّ पर अे'तिराज कर के फुड को डमेशा के लिये जडन्नम के डवाले कर देने वाला शप्स बडुत डी बडा बढ नसीब है. डर मुसल्मान को ईम्तिडान के लिये तय्यार रहना याछिये, फुडाअे रडमान جَزَّوَجَلَّ का पारड 2 सू-रतुल ब-करड की आयत नम्बर 214 में इरमाने ईड्रत निशान है :

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتَّخَلَّوْا الْجَنَّةَ وَ لَسَايَاتِكُمْ مِثْلُ النِّزِينَ خَلَّوْا مِنْ قَبْلِكُمْ (डालत) न आई.

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : क्या ईस गुमान में डो, के जन्नत में थले जाओगे और अल्मी तुम पर अगलों की सी डुदाड

डंधियों से गोशत नोये जते थे

सडरुल अइजिल डउरते अड्लामा मौलाना सख्येड मुडम्मड नईमुदीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي अजाईनुल ईरइान सईडा 71 पर मुन्द-र-जअे बाला आयते करीमा के तडूत इरमाते हैं : और जैसी सप्तियां उन (या'नी अगले मुसल्मानों) पर गुजर युकी अल्मी तक

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुइटे पाक पढा अटलाह उस पर दस रइमते बेजता है. (५)

તુમ્હેં પેશ ન આઈં. યેહ આયત ગઝવએ અહૂઝાબ કે મુ-તઅલ્લિક નાઝિલ હુઈ જહાં મુસલ્માનોં કો સર્દાં ઓર ભૂક વગૈરા કી સપ્ત તક્લીફેં પહોંચી થીં. ઈસ મેં ઉન્હેં સખ્ર કી તલ્કીન ફરમાઈ ગઈ ઓર બતાયા ગયા કે રાહે ખુદા મેં તકાલીફ બરદાશત કરના કદીમ સે ખાસાને ખુદા કા મા'મૂલ રહા હૈ, અભી તો તુમ્હેં પહલોં કી સી તક્લીફેં પહોંચી ભી નહીં.¹ “બુખારી શરીફ” મેં હઝરતે સય્યિદુના ખબ્બાબ બિન અરત રَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે મરવી હૈ કે હુઝૂર સય્યિદે આલમ જાતે થે, ઝમીન મેં ગઢા ખોદ કર ઉસ મેં દબા દિયે જાતે થે ફિર આરે સે ચીર કર દો ટુકડે કર દિયે જાતે થે ઓર લોહે કી કંઘિયોં સે ઉન કે ગોશત નોચે જાતે થે ઓર ઈન મેં સે કોઈ મુસીબત ઉન્હેં ઉન કે દીન સે રોક ન સકતી થી.”

(بخارى ج ٤ ص ٣٨٦ حديث ٦٩٤٣ مَلْخَصًا)

મુસીબત છુપાને કી ફઝીલત

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! બીમારી ઓર પરેશાની પર શિક્વા કરને કે બજાએ સખ્ર કી આદત બનાની ચાહિયે કે શિકાયત કરને સે મુસીબત દૂર નહીં હો જાતી બલકે બે સખ્રી કરને સે સખ્ર કા અજ ઝાએઝ હો જાતા હૈ. બિલા ઝરૂરત બીમારી વ મુસીબત કા ઈઝહાર કરના ભી અચ્છી બાત નહીં. યુનાન્યે હઝરતે સય્યિદુના ઈબ્ને અબ્બાસ રَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હેં કે રસૂલે અકરમ, નૂરે મુજસસમ

مدینہ

1 : ખઝાઈનુલ ઈરફાન, સ. 71

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : श्री शम्स मुज पर दुवदे पाक पढना भूल गया वोड जन्नत का रास्ता भूल गया. (طرائق)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने ईशाद ईरमाया : “जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे छुपाया और लोगों से उस की शिकायत न की तो अद्लाहु एَزَّ وَجَلَّ पर उक हें के उस की मग़्फ़िरत ईरमा दे.”

(مُعْجَم أَوْسَط ج ١ ص ٢١٤ حدیث ٧٣٧)

दाढ में दई के सबब में सो न सका ! (इक़ायत)

हुज्जतुल ईस्लाम उअरते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद गज़ाली नक़ल करते हें : उअरते सय्यिदुना अडूनई बिन कैस ए़रमाते हें : अक बार मेरी दाढ में शदीद दई हुवा जिस के सबब में सारी रात सो न सका. मैं ने दूसरे दिन अपने ययाजान की षिदमत में शिकायत की, के “मैं दाढ के दई की वजह से सारी रात सो न सका.” ईस बात को मैं ने तीन बार दोहराया. ईस पर उन्हों ने ईरमाया : तुम ने अक ही रात में डोने वाले अपने दई की ईतनी ज़ियादा शिकायत कर डाली ! डालां के मेरी आंभ को जाअेअ हुअे तीस भरस डो युके हें, (अगर्चे देअने वालों को मा'लूम डो मगर अपनी ज़बान से) मैं ने कत्मी किसी से ईस की शिकायत नहीं की. (أَحْيَاءُ الْعُلُوم ج ٤ ص ١٦٤) अद्लाहु रब्बुल ईज़्ज़त ए़َزَّ وَجَلَّ की उन पर रडमत डो और उन के सदेके डमारी डे हिसाब मग़्फ़िरत डो.

أَمِينٍ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जबां पर शिक्वअे रन्जे अलम लाया नहीं करते

नभी के नाम लेवा गम से धबराया नहीं करते

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तक़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह बढ भप्त हो गया. (अबुयुसुफ़)

32 ॐ हानी ॐ लुजा

गुमशुदा को बुलाने के 3 आ'माल

«1» ओक बडे कागज के यारों कोनों पर **يَا حَيُّ** लिख कर आधी रात को या किसी भी वक्त दोनों हाथों पर रख कर भुले आस्मान तले भडे हो कर हुआ दीजिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** या तो गुमशुदा इर्द जल्द वापस आ जायेगा या उस की जबर मिल जायेगी. (मुदत : ता हुसूले मुराद)

«2» 40 दिन तक रोजाना दो रकअत नज़्द पढ कर **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 119 बार पढिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** लागा हुआ शप्स वापस आ जायेगा.

«3» अगर कोई चीज़ गुम हो गई हो या कोई शप्स गाईब हो गया हो तो **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 1008 बार पढिये, अल्लाह उज़्जल ने याहा तो गुमशुदा शे या आदमी मिल जायेगा. (मुदत : ता हुसूले मुराद)

गुमशुदा इन्सान, गाडी और माल वापस मिले (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)

«4» अल्लाहु रब्बुल इज़्जत की रहमत पर मजबूत तरोसे के साथ चलते फिरते, वुजू बे वुजू जियादा से जियादा ता'दाद में या रब्बे मूसा या रब्बे कलीम. **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط** पढते रहिये. इसी दौरान यन्त बार दुर्रद शरीफ़ भी पढ लीजिये. गुमशुदा इन्सान, सोना, माल, गाडी वगैरा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मिल जायेंगे. बल्के दीगर हाज़त के लिये भी येह अमल मुफ़ीद होगा. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

करमाने मुस्तकः صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुबदे पाक पढा, उसे कियामत के दिन मेरी शक़ायत मिलेगी. (अबुअर्रुफ़)

हाजतें पूरी होने के लिये 3 आ'माल

﴿5﴾ يَا اللهُ 39 बार लिख कर बाजू पर बांध कर या गले में पहन कर जिस हाकिम या अफ़सर के पास जिस ज़रूरत काम के लिये जाये जिस हाकिम या अफ़सर के पास जिस ज़रूरत काम के लिये जाये वोह उस की हाजत पूरी करे.

﴿6﴾ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ 321 बार पढ कर हरबे तौफ़ीक़ कोई भीठी खीज बख्यो में तक़सीम कर दीजिये, يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ मुराद पूरी होगी.

﴿7﴾ قَلَّتْ حِيلَتِي أَنْتَ وَسَيِّئَتِي آذَرَكْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ¹ उठते बैठते, चलते फिरते, भा पुजू बे पुजू पढते रहिये, يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ मुराद पूरी होगी.

बर्फ़बारी रोकने के लिये

﴿8﴾ يَا عَزَّ وَجَلَّ يَا حَافِظُ, يَا خَافِضُ लोहे के तवे की उलटी तरफ़ अल्लाह लोहे के तवे की उलटी तरफ़ अल्लाह के नीचे रख दीजिये, يَا عَزَّ وَجَلَّ يَا حَافِظُ, يَا خَافِضُ उंगली से लिख कर आस्मान के नीचे रख दीजिये, يَا عَزَّ وَجَلَّ يَا حَافِظُ, يَا خَافِضُ बर्फ़बारी बन्द हो जायेगी.

दुश्मन से हिफ़ाज़त के 4 अवराह

﴿9﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ यलते फिरते उठते बैठते ब कसरत पढने से दुश्मन के शर से हिफ़ाज़त होगी और रहमते रबबे गइफ़ार से दुश्मने अय्यारो मक्कार के तमाम वार खाली जायेंगे.

1 : तरजमा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरे हीले खत्म हो गये आप ही मेरा वसीला हूँ मुझे संभालिये.

करमाने मुस्तफ़ा: صلى الله تعالى عليه وآله وسلم: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (मैराज़)

﴿10﴾ **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ يَا قَابِضُ، يَا بَاسِطُ** 30 बार हर रोज़ पढिये दुश्मन पर इत्तहासिल होगी.

﴿11﴾ **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ يَا حَافِظُ، يَا خَافِضُ** 500 बार पढिये दुश्मन के सदमे से अमान में रहेंगे.

﴿12﴾ अगर ताकत वर दुश्मन से जान व माल को अतरा लाहिक हो तो हर नमाज़ के बाद **يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** 421 बार (अव्वल आभिर अक बार दुरुद पाक) पढिये फिर गिडगिडा कर डिफ़ाजत की हुआ कीजिये, दुश्मन के शरों इसाद से मडफूज रहेंगे.

कश्ती (और हर तरह की सुवारी) की डिफ़ाजत के 2 अवराह

﴿13﴾ कश्ती में सुवार होने से पहले **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 21 बार पढ लेने वाले का सारा सफ़र **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आराम व सुकून के साथ कटेगा और वोह कश्ती डूबने से बची रहेगी.

﴿14﴾ कश्ती या किसी भी सुवारी पर सुवार होते वक्त **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 132 बार पढ लेंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** रास्ते की आफ़तों से डिफ़ाजत होगी यहाँ तक के जोरदार तूफ़ान में भी कश्ती डूबने से बची रहेगी.

सफ़र में आसानी व काम्याबी के 2 आ'माल

﴿15﴾ सफ़र शुरू करने से पहले **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 11 मर्तबा पढ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** सफ़र में आसानी होगी.

﴿16﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 49 बार लिख कर सफ़र में साथ रखने से घर आने

करमाने मुस्तफ़। صلى الله تعالى عليه وآله وسلم: जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ़ पढेगा में डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (क़ुरआन)

तक जमीनी और दरियाई आइतों से डिफ़ाजत रहेगी और जिस मकसद के लिये सफ़र किया डोगा उस में काम्याबी नसीब डोगी. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

शादी की रुकावट के 3 इहानी घलाष

«17» जिन लडकियों की शादी न डोती डो या मंगनी डो कर टूट जाती डो वोड नमाजे इश के आ'द **يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** 312 बार पढ कर अपने लिये नेक रिश्ता मिलने की दुआ करें, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**, जल्ल शादी डो और भावन्ड भी नेक मिले.

«18» **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 143 बार लिख कर ता'वीज बना कर कुंवारा अपने बाजू में बांधे या गले में पहन ले **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस की जल्ल शादी डो जाओगी और घर भी अच्छा थलेगा.

«19» लडकी या लडके के रिश्ते में रुकावट डो या ईस में बन्दिश का शुभा डो तो रोजाना आ'द नमाजे इश आ वुजू डर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط** के साथ सू-रतुतीन 60 मर्तबा पढिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** थालीस दिन के अन्डर अन्डर काम डो जाओगा.

हादिसात से डिफ़ाजत वाला अमल

«20» **بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ**¹ (अबुल्लाउरुज ६/२०, सहीह ५/१०५)

अेक साडिख का कडना है : घर से बाडर निकलने की (डिपर डी डुई) दुआ

¹ **مَدِينَة**
1 : अल्लाड **عَزَّوَجَلَّ** के नाम से, में ने अल्लाड **عَزَّوَجَلَّ** पर भरोसा किया, भुराई से बयने और नेकी करने की कुव्वत अल्लाड **عَزَّوَجَلَّ** ही की तरफ़ से है.

(अबिस) इरमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज पर दुरदे पाक की कसरत करो बेशक ये ल तुम्हारे लिये तदारत है.

जब से पढनी शुरुअ की है الْحَمْدُ لِلَّهِ कर्ण बार छापिसे से बया हूं और न जाने कितनी बार तो मेरी गाडी के शीशे दूसरी गाडियों के साथ टकरा गये हैं लेकिन अब्दाह के इज़्जल से कोर्ण छापिसा या नुक्सान नहीं हुवा.

मुकदमा ज़तने के लिये 2 आ'माल

﴿21﴾ जो ना ज़र्रज मुकदमे में इंस गया हो, मुकदमे की तारीख वाले दिन **يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** 654 बार पढ कर कोर्ट में जाओ, कैसला र्णसी के छक में छोगा.

﴿22﴾ **وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا** (पे 11: 181) मुकदमे की काम्याबी के लिये रोजाना किसी भी अेक नमाज़ के आ'द 133 बार पढिये. छक पर छों तो पढिये, के नाछक पढने वाला अज़ाबुद मुसीबत में गिरिफ़तार हो सकता है.

खिल्ला कशी में योट जाई हो तो

﴿23﴾ **يَا وَاحِدٌ** 3000 बार 11 दिन तक रोजाना पढिये. (अवल्ल आबिर ग्यारह ग्यारह मर्तबा दुरद शरीफ़ पढिये) **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** दिल पुर सुकून हो जाओगा.

कैड से रिहाई के 2 आ'माल

﴿24﴾ अगर कोर्ण शप्स जुल्मन कैड हो गया हो तो खलते फिरते, उठते बैठते **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** कसरत से पढे और **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** कागज़ पर

इरमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْبِرَّ وَسَلَّمَ. तुम जहां भी हो मुज पर दुरुद पढो के तुम्हारा दुरुद मुज तक पछोयता छे. (फ़रान)

लिप कर ता'वीज बना कर पढ़न भी ले, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** जल्द रिहाई पायेगा.

﴿25﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** ब कसरत पढा करे, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कैद से जल्द रिहा हो जायेगा.

डूँयें या नहर के पानी की कमी का इहानी घलाज

﴿26﴾ अगर किसी डूँयें या नहर का पानी कम हो जाये तो ठीकरी पर लिप कर **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط** लिप कर उस डूँयें या नहर में डाल दीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** पानी में ब-र-कत हो जायेगी.

दुकान, मकान, जानदान व सामान की

छिड़कत के 5 आ'माल

﴿27﴾ दुकान या मकान या माल व अस्बाब पर रोजाना **سُبْحَانَ اللَّهِ** 49 बार पढ कर दम कर दिया जाये तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मुफ्तलिङ्ग नुकसानात से छिड़कत होगी.

﴿28﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 69 बार कागज पर लिप (या लिपवा) कर क़ेम बनवा कर मकान या दुकान वगैरा में लटका दीजिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** वहां आसेब नही आयेगा और अगर पडले से होगा तो भाग जायेगा.

﴿29﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** पढ कर अगर इस्ति'माल की चीजों पर दम कर दिया जाये तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** छिड़कत भी होगी और ब-र-कत भी.

﴿30﴾ रकम और हर किस्म की चीज के लैन दैन (या'नी लेने और देने) से

करमाने मुस्तफ़ा على الله تعالى عليه وآله وسلم: जिस ने मुज पर दस भरतबा दुरदे पाक पढा अद्लाह उंस पर सो रलभते नाजिल करमाता है. (फ़रान)

पहले **يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** 21 बार पढने की ज़ो आदत बना लेंगे, वोह **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ईस मुआ-मले में नुकसानात से बचे रहेंगे.

﴿31﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 65 बार लिख कर अपने पास रखने वाला ज़ालिमों के जुल्म से मलकूज़ रहेगा.

सर दई से भिनटों में नज़ात

(अयान कर्दा तिब्बी और देसी इलाज अपने तबीब के मशवरे से कीजिये)

अक यम्मय यीनी और दो अदद बडी इलाययियों के दाने निकाल कर मुंड में रख लीजिये. और इन्हें खूंगम की तरह यभाते और यूस यूस कर रस पीते रहिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** तकरीबन पांय भिनट में शदीद सर दई से नज़ात मिल जायेगी, यन्द दिन के इस्ति'माल से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दई सर का भरज जाता रहेगा. शूगर के मरीज़ यीनी के बज़ाये 12 अदद हरे पोदीने के पत्ते इलाययियों के साथ इस्ति'माल करें.

यूरिक असिड का घलाज, मूली और लीमूं से

अक दरमियानी साईज की मूली के टुकडे कर के उस पर अक लीमूं छिडक कर, दीगर नमक मसाला डाले बिगैर नहार मुंड जा लीजिये अक घन्टे तक और कोई यीज मत पआईये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** “यूरिक असिड” नोर्मल हो जायेगा. (येह अमल 7 रोज तक कीजिये)

इरमाने मुस्तफ़ा، على الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अेक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रउमतें भेजता है. (स्)

शूगर, कोलेस्ट्रोल और हाई ब्लड प्रेशर का आसान धलाज

करेले छील कर सुभा लीजिये, फिर बीज समेत पीस कर पावडर बना लीजिये. सुबह व शाम आधी आधी यमयी पाने से शूगर, हाई ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रोल के मरज में इन्शाअल्लाह उन्का इलाज होगा.

मुप्तलिफ़ बीमारियों और परेशानियों का इहानी धलाज

﴿32﴾ जिस्मानी, नफ़िसयाती, मुप्तलिफ़ बीमारियों, टेन्शन, डिप्रेशन, अ-सरात, ज़ादू, नज़रे बद और बन्दिश वगैरा के लिये अेक अज्जुबुल असर अमल है. तमाम घर वाले अगर येह अमल करते रहें तो इन्का इलाज होना याक़िनी और परेशानियों से नज़ात मिले, घर अमन का गइवारा बने.

इज की दो सुन्नतों और ज़ोइर, मगरिब व ईशा के इजों के बा'द वाली दो सुन्नतों में सू-रतुल इतिहा के बा'द कुरआने करीम की आपिरी छ सूरतें ईस तरह पढिये : पहली रकअत में सू-रतुल काफ़िरन, सू-रतुन्नसर और सू-रतुल्लहब और दूसरी रकअत में सू-रतुल ईप्लास, सू-रतुल इलक और सू-रतुन्नास पढिये. हर सूरत के इब्तिदा में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढिये. (मुदते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा) कबी कबी येह सूरतें तर्क कर के कोई और सूरत पढ लीजिये. मक-त-बतुल मदीना की मन्बूआ बहारे शरीअत जिल्द अक्वल सफ़हा 548 पर मस्अला नम्बर 30 पर है : सूरतों का मुअय्यन (Fix) कर लेना, के ईस नमाज में हमेशा वोही सूरत पढा करे, मकइहे (तन्जीही) है, मगर जो सूरतें अहादीस में वारिद हैं उन को कबी कबी पढ लेना मुस्तहब है, मगर

کرمائے موشکافا صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم: شمس موزا پر دھڑے پاک پھنا بول گیا وولڈ جننات کا رستا بول گیا. (طرائق)

مؤءا-وماء (لہمہشائی) ن کرے کے کوئی وائجیہ ن گومان کر لے.

گمہ مہیانا، بکیا،
مگنرر اور بے
لھساہ جنناتول
فرہوس مے آکا
کے پوس کا تالھب



23 س-فرول موزفر 1437 س.لھ.

06-12-2015

یہ ہساالا پٹ کر دوسرے کو دے دیجیے

شاہی گمی کی تکرہاا، ہجائیمااا، آ'راس اور جولوسے
مہلاہ وگہرا مے م-ن-بائول مہیانا کے شائےا کڈا رساہل اور م-ہنی
ڈلوں پر موشامل پمفلٹ تکسیم کر کے سواہ کماہیے، گالکوں کو ب
نہیئے سواہ تولڈے مے دےنے کے لہیے اپنی دکانوں پر لہی رساہل رلہنے کا
ما'بول بناہیے، اہار فرہوشوں یا بئوں کے آریاے اپنے مادلے کے وروں مے
لڑبے تویک رھسالے یا م-ہنی ڈلوں کے پمفلٹ لہر مالہ پلویا کر نہکی کی
دا'واا کی ڈمے مہاہیے اور اہل سواہ کماہیے.

ماخذومراج

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
دارالمرفقہ بیروا	تنبیہ المخرن		قران مجید
دارصادر بیروا	احیاء العلوم	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	خزان العرفان
دارالکتب العلمیہ بیروا	مکافئ القلوب	دارالکتب العلمیہ بیروا	بخاری
دارالکتب العلمیہ بیروا	عیون الکایاا	دارابن حزم بیروا	مسلم
مرکز اہلسنت برکات رضا اہند	شرح الصدور	داراحیاء التراث العربی بیروا	ابوداؤد
مکتبہ الحققیہ اسنبول	شواہد النور	دارالفکر بیروا	مسند امام احمد بن حنبل
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دارالکتب العلمیہ بیروا	معجم اوسط
قادی پبلشرز مرکز الاولیاء لاہور	معلم تقریر	دارالکتب العلمیہ بیروا	الفرولس برأا اور الخطاب
☆☆☆☆☆	☆☆☆☆☆	المکتبہ العصریہ بیروا	المرض والکفارات

करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिंक हुआ और उस ने मुज पर दुरदे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (हंज)

इंडरिस

उन्वान	स.	उन्वान	स.
दुरद शरीफ़ की इजीवत	1	दाढ में दद के सभभ	
अल्लाह के हर काम में छिकमत होती है	3	में सो न सका ! (छिकायत)	21
अल्लाह जो करता है बेहतर करता है	3	32 इरानी ईलाज	22
अगर डाकू आ जाता तो?	5	गुमशुदा को बुलाने के 3 आ'माल	22
जिगर की तब्दीली (छिकायत)	6	गुमशुदा ईन्सान, गाडी और माल	
आजमाईशों की बारिश	6	वापस मिले (إِن تَوَلَّوْاْ كُنْتُمْ كَالْأَعْمَىٰ)	22
मुजे नाबीना रहना मन्जूर है	8	डाजतें पूरी होने के लिये 3 आ'माल	23
दुप्यारा सभ तकलीफें भूल जायेगा !	8	भईबारी रोकने के लिये	23
“ईमान” का लिबास (छिकायत)	9	दुश्मन से छिंकाजत के 4 अवरद	23
करबला वालों से भद कर मुसीबत		कशती (और हर तरफ़ की सुवारी) की	
जदा कौन ?	10	छिंकाजत के 2 अवरद	24
रोशन कब्रें	10	संहर में आसानी व काम्याबी के 2 आ'माल	24
काश ! हमारे बदन केंयियों से काटे जाते !	11	शादी की रुकावट के 3 इरानी ईलाज	25
दरिन्दों ने पेट फ़ाड डाला था (छिकायत)	12	छादिसात से छिंकाजत वाला अमल	25
कीयड में लिथडा हुआ बय्या (छिकायत)	13	मुकदमा जतने के लिये 2 आ'माल	26
कोई लमलाई नहीं	14	बिल्ला कशी में खोट पाई हो तो	26
आफ़त व राहत के बारे में पुर छिकमत रिवायत	14	कैद से रिहाई के 2 आ'माल	26
आसाईशों पर मत झूलो !	15	कूअें या नहर के पानी की कमी का	
मुसीबत की अज्जब छिकमत (छिकायत)	16	इरानी ईलाज	27
छाथों छाथ सज्जा	17	दुकान, मकान, भानदान व सामान	
आभिरत की मुसीबत से दुन्या की		की छिंकाजत के 5 आ'माल	27
मुसीबत आसान है	17	सर दद से भिनटों में नजत	28
हमारे हक में क्या बेहतर है, हमें नहीं मा'लूम	18	यूरिक असिड का ईलाज, मूली और लीमूं से	28
हर अक को ईम्तिदान के लिये		शूगर, कोलेस्ट्रॉल और छाई	
तय्यार रहना चाछिये	18	ब्लड प्रेशर का आसान ईलाज	29
कंधियों से गोशत नोये जाते थे	19	मुफ्तलिफ़ बीमारियों और परेशानियों	
मुसीबत छुपाने की इजीवत	20	का इरानी ईलाज	29

येड रिसाला पढ लेने के आ'द सवाभ की निघ्यत से किसी को दद दीजिये